संख्या 160 मूल्य 7/-
कीमतीलाल और
सात तोतों का रथ
कीमतीलाल का स्टीकर मुफ्त

की हॉरर सीरीज का एक और कॉमिक्स

हाय रे ! बचा लो, इन प्रलयंकारी खिलौनों से बचा लो । कसम खाता हूं, अब कभी गुण्डागर्दी नहीं करूंगा ।

किसके थे ये प्रलयंकारी खिलौने ? और कैसे बन जाते थे ये विनाशक खिलौने ? क्या रहस्य था इनका ? जानने के लिए पढ़ें–
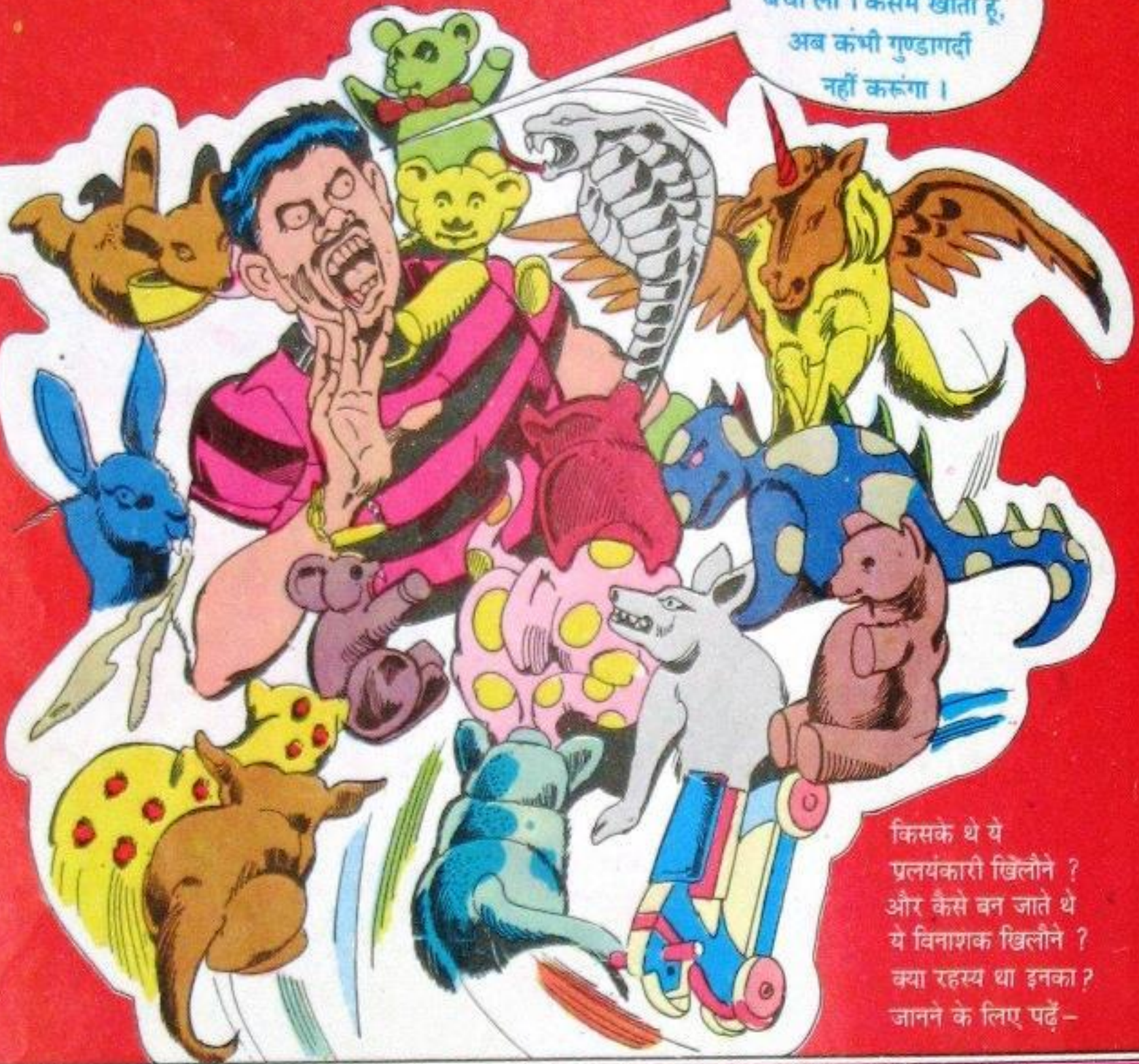
रौंगटे खड़े कर देने वाला हाहाकारी कॉमिक्स

कनखजूरा

शीघ्र प्रकाशित

प्रकाशक: परम्परा ऑफसेट प्रिंटर्स प्रा० लि० A/53, टीचर कॉलोनी, समयपुर, दिल्ली-42

कीमती लाल और सात तोतों का रथ

सम्पादक- अजय पलाहा
कथानक- कलीम आनन्द
चित्रांकन- आकृति फीचर्स

...जिनमें प्रमुख थे -

यशवंत नगर का तांत्रिक जांब्ला।

पाताल लोक की अग्निमाला।

रंगपुर के राजा विलक्षण सिंह।

दानवलोक का राक्षस-राज दैत्यानील।

सर्पलोक का विषेन्द्र।

और श्मशान की प्रेतनी दुष्टाकृति!

हरफनमौला कीमतीलाल रुद्रपुर की तरफ बढ़ा चला जा रहा था, अपने मित्र प्रयाग सिंह से मिलने।
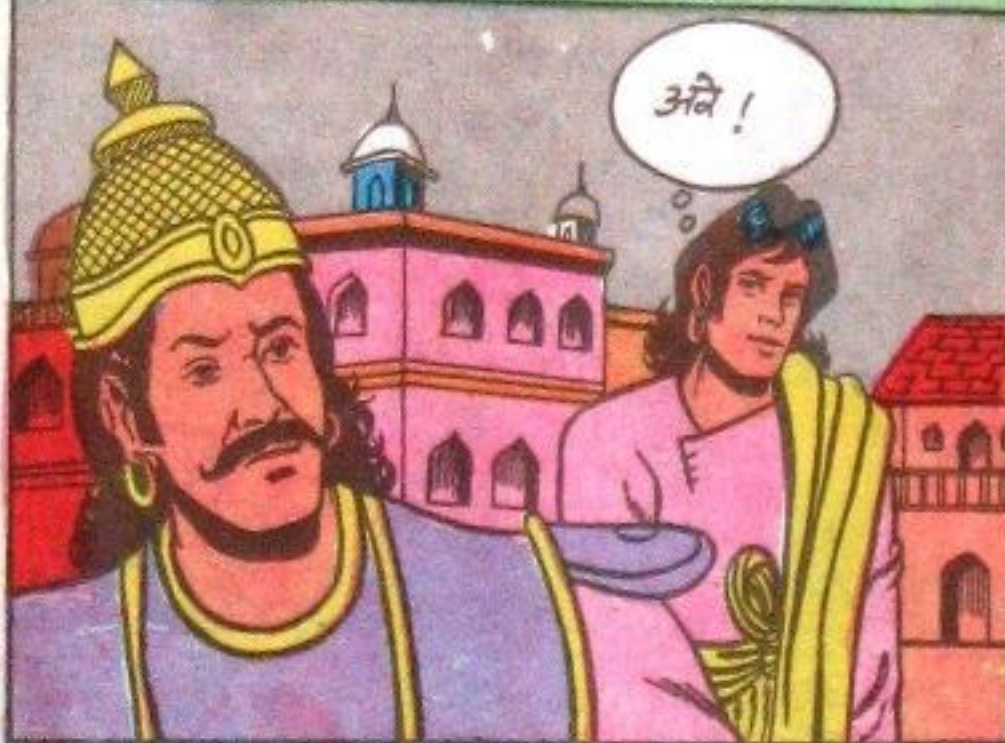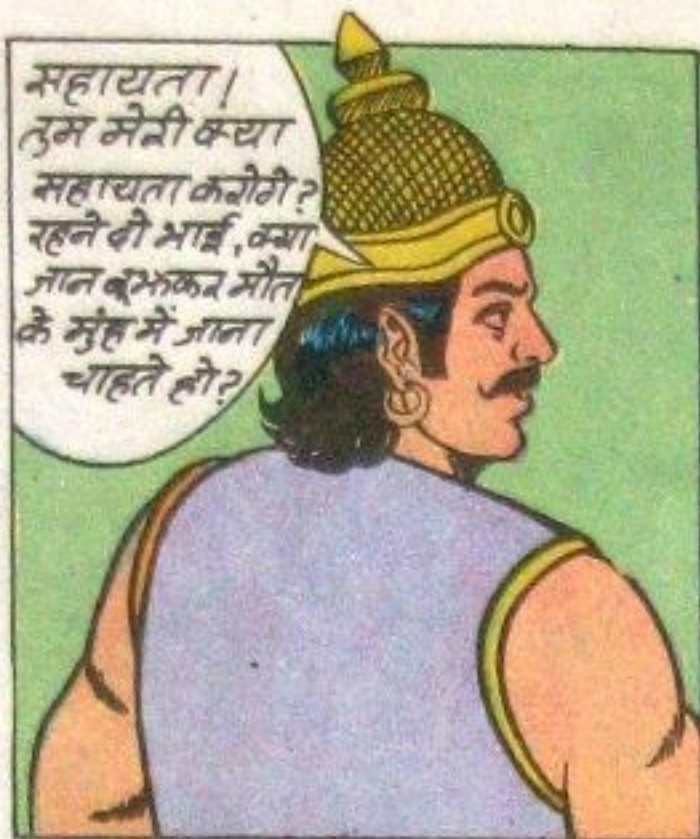
सहायता। तुम मेरी क्या सहायता करोगे? रहने दो भाई, क्या जान बूझकर मौत के मुंह में आना चाहते हो?

तुम बताओ तो सही।
तो फिर सुनो, मैं रूपपुर राज्य का सेनापति विशालनाथ हूं। पिछली रात स्वप्न में मैंने एक रथ देखा था, जिसके आगे सात तोते बंधे थे।

क्याSSS?
हां, और वह रथ नील घाटी में रह रहे किसी वृद्ध के पास है ...

... आज प्रात: जब मैं दरबार में पहुंचा तो मैंने महारानी विद्यावती को उस रथ के बारे में बता दिया। मेरी बात सुनकर उन्होंने उस रथ को प्राप्त करने के लिए मुझे ही हुक्म दे दिया और कहा कि अगर मैं वह रथ न ला सका तो वह मुझे फांसी पर लटकवा देंगी।

अरे! तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? नील घाटी जाओ और उस वृद्ध से वह रथ ले आओ।

अगर वह रथ पाना इतना आसान होता तो अब तक उसे कोई भी हथिया चुका होता।
क्या मतलब?

मतलब यह कि नील घाटी तक पहुंचना ही बड़ा दुष्कर है...
...और अगर किसी तरह वहां कोई पहुंच भी गया तो दुष्ट सोमान से वह रथ पाना मुश्किल है। यदि कोई उससे वह रथ जबरदस्ती छीनने की कोशिश करेगा तो सीधा मौत के मुंह में जाएगा, ऐसा उसे वरदान है।
क्या SSS? लेकिन तुम्हें यह सब कैसे मालूम?
मुझे यह सब राजगुरु ने बताया है, लेकिन तुम कौन हो भाई?
मैं कीमती लाल हूं और होशियार पुर से आया हूं...
...अगर तुम कहो तो मैं तुम्हारी मदद करने को तैयार हूं।
सोच लो, इसमें तुम्हारी जान को खतरा है।
जबतक मेरे साथ आचार्य कपिलेश्वर का आशीर्वाद है, मुझे कोई खतरा नहीं है।
फिर कीमतीलाल सेनापति विशालनाथ को आश्वासन देकर चल पड़ा। अब उसे नील घाटी रवाना होना था।
तुम मेरा इन्तजार करो। मैं शीघ्र ही सफल होकर लौटूंगा।
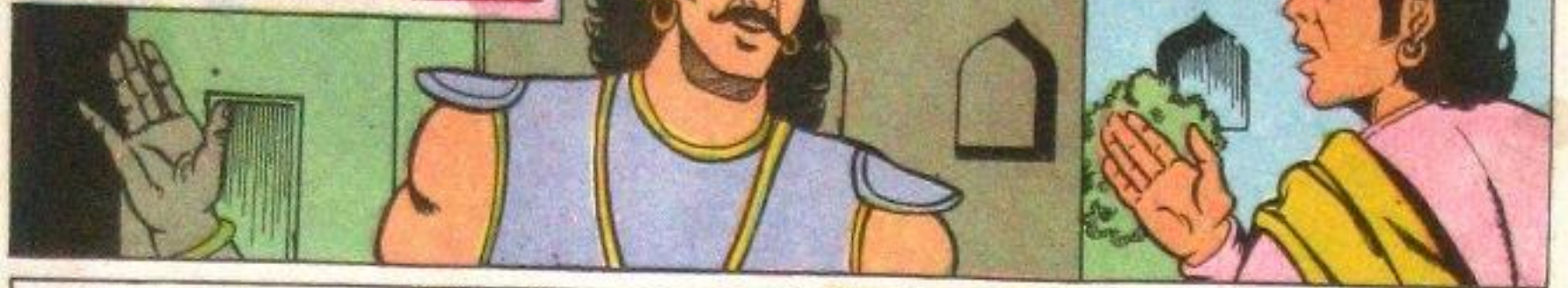
तभी आचार्य कापिलेश्वर प्रकट हुए।

वत्स कीमतीलाल! तुम्हारा यह अभियान जोखिम भरा जरूर है, लेकिन मैं तुम्हारे साथ हूं क्योंकि उस रथ के स्वामी सोमान ने उसका दुरुपयोग करने की ठान ली है और जिस दिन भी सोमान ने उस रथ का उपयोग किया...

उस दिन संसार में प्रलय आ जाएगी। अतः सिर्फ एक ही उपाय है। उन तोतों को सूझबूझ के साथ समाप्त कर दिया जाए। लेकिन उन तोतों को खत्म करने से पूर्व उन्हें पाना आवश्यक है...
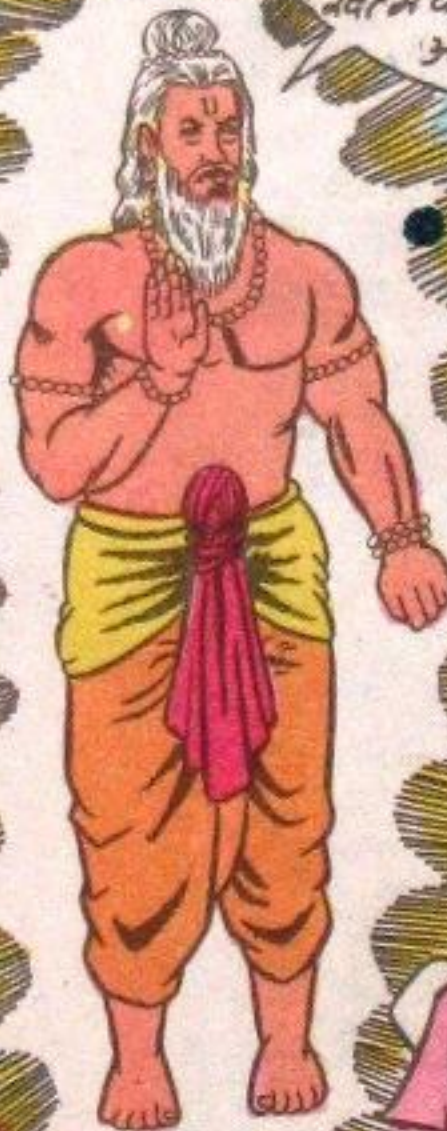
उधर देवलोक में खलबली मची हुई थी।

सोमान ने अगर तोतों का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया तो अन्य लोकों के साथ-साथ देवलोक भी खतरे में पड़ जाएगा।

हां, अगर अमृतवान तोते से अमृत प्राप्त करके सोमान ने पी लिया तो हम देवताओं का क्या होगा?

नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे।

कुछ ही देर बाद –
चिंता की कोई बात नहीं है। इस सम्बंध में मैं काफी पहले ही ब्रह्माजी से मिल चुका हूं...
... आप लोग निश्चिंत होकर जाइए। मेरी निगाह इस समस्या के समाधान पर ही लगी हुई है।
इन्द्र देव का आश्वासन पाकर सभी देवगण वापस लौट गए।

इधर कीमतीलाल नील घाटी के निकट पहुंचा ही था कि तभी आचार्य कपिलेश्वर फिर प्रकट हुए और –
वत्स! यह लो, सुनहरा पत्थर...
... यह पत्थर सिर्फ दो घंटे तक सुनहरा रहेगा। उस दौरान तुम जिस किसी के आगे यह पत्थर करोगे, वह तुम्हारी सब बात मान लेगा।
इतना कहकर आचार्य जी अंतर्धान हो गए।

कीमतीलाल अब अपने लक्ष्य के करीब था।
उस रथ के तोतों को प्राप्त करके उन्हें कैसे खत्म किया जाएगा, यह तो आचार्य जी ने बताया ही नहीं।

उधर रंगपुर के राजा विलक्षण सिंह ने नील घाटी में पहुंचकर सोमान की गुफा में प्रवेश किया।
अब मुझे चक्रवर्ती सम्राट बनने से कौन रोक सकता है?

कुछ ही पलों बाद-

हा-हा-हा-! अब मैं इन तोतों का उपयोग करने जा रहा हूं। है कोई मुझे रोकने वाला?

यह तेरी भूल है। इन कटे हुए सिरों को देख रहा है न! यह सभी जीवित अवस्था में आए थे रथ लेने, लेकिन मुझे मारने के बजाय स्वयं मौत का ग्रास बन गए।

मुझे डरा रहे हो, लेकिन मैं इतनी आसानी से तुम्हें नहीं छोड़ने वाला।

पलक झपकते ही विलक्षण सिंह की तलवार चमकी और –
खच्च

लेकिन सोमान की गर्दन तो फिर से जुड़ गई थी जबकि विलक्षण सिंह –
हा-हा-हा!
मैं जल रहा हूं। मुझे नहीं चाहिए यह रथ।
चाओ SSS
कुछ ही पलों में उसका शरीर राख हो चुका था।

हा-हा-हा! जब तक यह रथ मेरे पास है, मुझे कोई नहीं मार सकता।

तभी वहां कीमतीलाल ने प्रवेश किया।
बस! अब बहुत हो चुका। लाओ, यह विनाशकारी रथ मुझे सौंप दो।
कौन है तू और मरने के लिए क्यों चला आया?

मैं मरने नहीं, सात तोतों का रथ लेने आया हूं।
यह कहकर कीमती लाल ने सुनहरा पत्थर सोमान के आगे कर दिया।

अगले ही पल –
??
ठीक है, तू रथ ले जा सकता है, लेकिन फिर भी तू मारा जाएगा...

...क्योंकि तुझे नहीं मालूम कि इन तोतों का उपयोग किस क्रम से करना है।
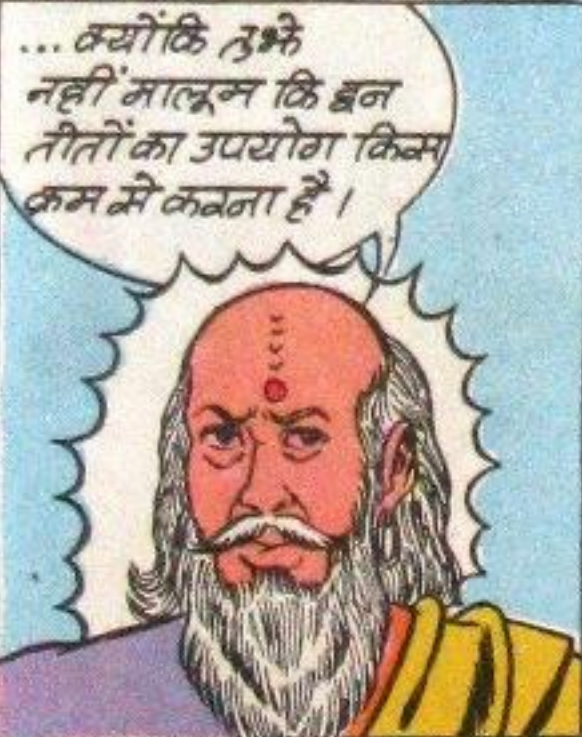
सोमान बाबा! आप इसकी चिन्ता मत कीजिए और रथ मेरे हवाले कर दीजिए।
नहीं मानता तो जा, ले जा।

ऐसे नहीं, पहले आप तोतों को आदेश दें कि मैं तुम्हें कीमतीलाल के हवाले कर रहा हूं।
और सोमान को वैसा ही कहना पड़ा।

अगले ही पल सात तोतों का रथ कीमतीलाल के हाथ में था।
और सोमान नींद में डूबता चला गया।

कीमतीलाल गुफा से बाहर निकला और नील घाटी से ऊपर की ओर बढ़ने लगा।
अब मैं क्या करूं? इस रथ को नष्ट कैसे करूं?

अगर इन तोतों को गलत क्रम में आदेश दिया तो मैं स्वयं मारा जाऊंगा।

इसी उलझन में फंसा अभी वह मुश्किल से कुछ ही दूरी तय कर पाया था कि –
ला, यह रथ मुझे दे दे।
नहीं ऽऽऽ! यह रथ मैं किसी को नहीं दे सकता। मैं इसे नष्ट कर दूंगा।

नहीं ऽऽऽ! मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा।

अगले ही पल –
उफ ! यह क्या ?
अब तुम्हें मरना ही होगा।
कीमतीलाल पंचमुखी सांप को देखकर भयभीत हो उठा।

तभी –
वत्स कीमती! सुनहरा पत्थर दिखाकर इसे अपने वश में कर लो और आगे बढ़ो।

कीमतीलाल ने ऐसा ही किया और –
विषेन्द्र! मेरे पीछे-पीछे आओ।
पंचमुखी सांप कीमतीलाल के पीछे-पीछे चलने लगा।

अपने विचारों में डूबा कीमतीलाल ऊपर चढ़ता चला जा रहा था कि उसके सामने तांत्रिक जांबला आ खड़ा हुआ।
तू ले आया तोतों वाला रथ? ला, इसे मुझे दे दे। यह बच्चों का खिलौना नहीं है।
मुझे मालूम है, इसीलिए यह रथ मैं तुम्हें नहीं दूंगा।

नहीं देगा ? तो फिर देख, क्या हश्र करता हूं मैं तेरा।
कीमतीलाल सुनहरा पत्थर निकाल पाता कि उससे पहले ही जांगुला कोई मंत्र बुदबुदाने में सफल हो गया।

अगले ही पल–
क्या हुक्म है मेरे स्वामी।
इसे मौत के हवाले करके रथ छीन लो।
काली राक्षसी कीमतीलाल को कोई हानि पहुंचा पाती...

... इससे पहले ही_
कीमतीलाल! अब तोतों को समाप्त करने का समय आ गया है। सबसे पहले तुम शस्त्रवान तोते को आदेश दो कि वह इस राक्षसी को खत्म कर दे।

अगले ही पल –
हे शस्त्रवान तोते! खत्म कर दे इस दुष्टा और इसके स्वामी को।
वह तोता दो मुंह वाली तलवार में बदल गया था।

फिर पलक झपकते ही–
आह SSS!
खच्च
यह देख जांगुला ने फिर कोई मन्त्र पढ़ा।

फलस्वरूप एक भयानक चमगादड़ प्रकट हुआ।
शस्त्रवान तोते ने उसे भी खत्म कर दिया।

फिर वह तोता तांत्रिक जंगुला के पास पहुंचा और-
आऽऽऽ
तत्पश्चात् शस्त्रवान तोता आकाश में विलीन हो गया।

तभी-
फिस्स! फिस्स!

कीमतीलाल ने मुड़कर देखा तो चौंक पड़ा।
लगता है, इस पर से पत्थर का प्रभाव समाप्त हो गया है। अब मैं क्या करूं? विषेन्द्र को कैसे समाप्त करूं?
वह चिंतित हो उठा...

... लेकिन आचार्य कपिलेश्वर से उसकी मनोदशा छिपी न रह सकी।
वत्स! अब सर्पवान तोते की बारी है।

कीमतीलाल के आदेश देने पर सर्पवान तोता भयानक अजगर में बदल गया और...
... विषेन्द्र को निगल कर आकाश में उड़ गया।

कीमतीलाल आधा रास्ता तय कर चुका था कि उसे एक और विपति से दो-चार होना पड़ा।

स..SSSSफ्!SS
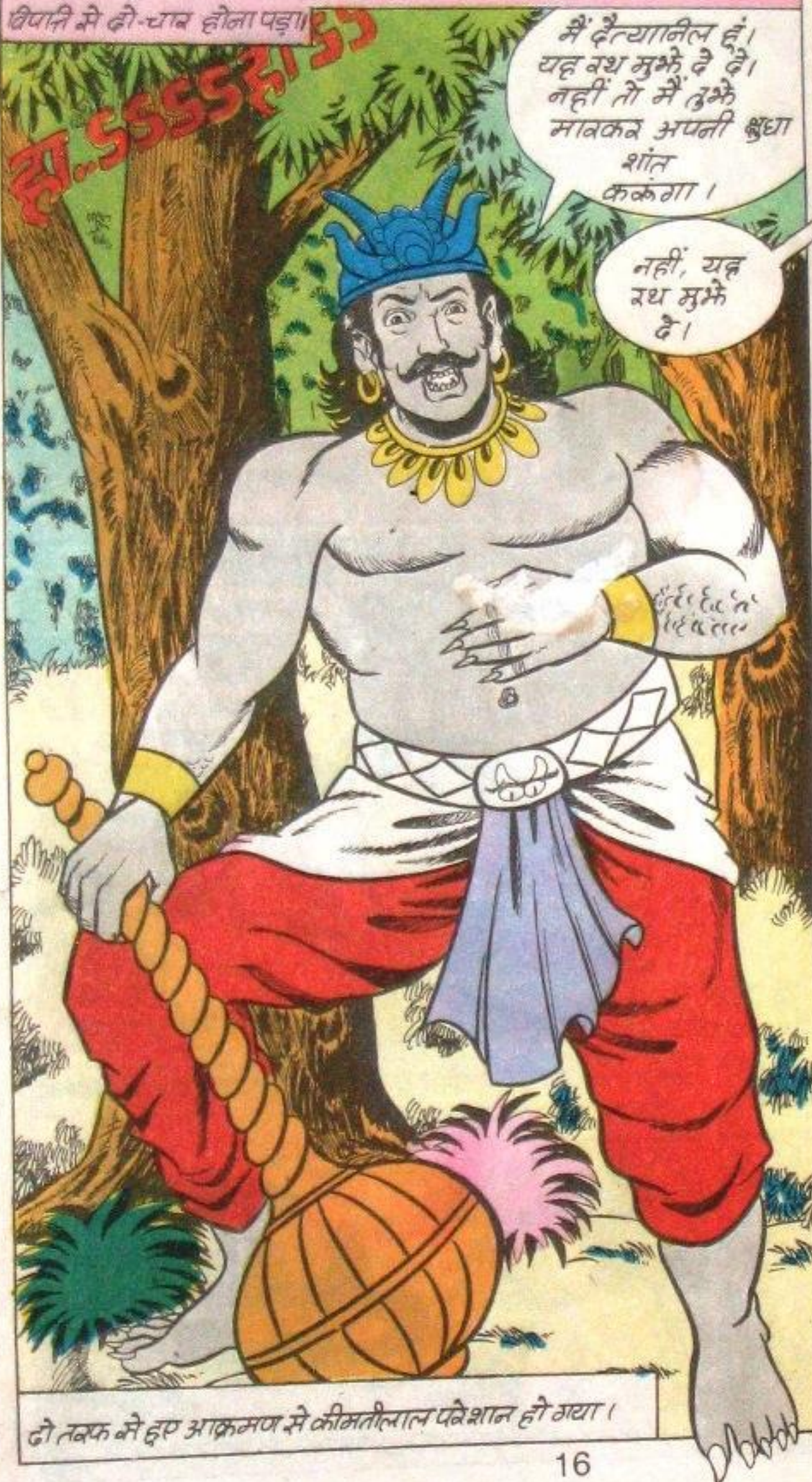
मैं दैत्यानील हूं। यह रथ मुझे दे दे। नहीं तो मैं तुझे मारकर अपनी क्षुधा शांत करूंगा।

नहीं, यह रथ मुझे दे।

दो तरफ से हुए आक्रमण से कीमतीलाल परेशान हो गया।

लिया।

ठीक है! अभी हो जाएगा फैसला।
हां-हां, क्यों नहीं?

युद्ध शुरू हो गया।
उफ!
सायऽऽसाय

...इधर-
वत्स! अब तुम्हें वायुयान और प्रेतवान तोतों से काम लेना है। लेकिन पहले वायुयान को आदेश देकर अग्निमाला को खत्म करना है। भूलकर भी पहले प्रेतवान से काम मत लेना।

में से कोई
अभी-

जा, फिर भाग जा यहां से।
ओह! यह तो चली जाएगी!
मगर कीमतीलाल का ऐसा सोचना गलत था...
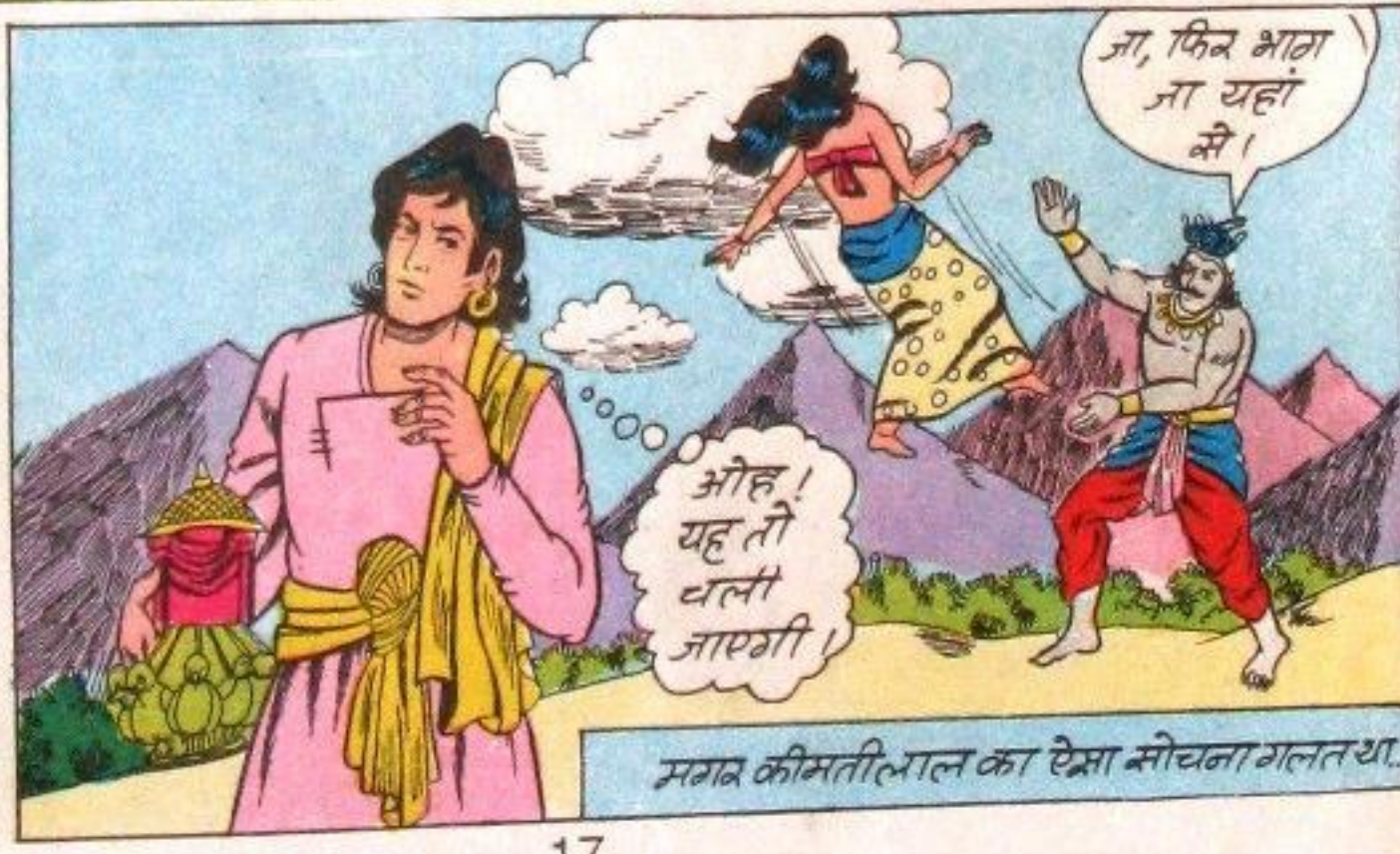
...क्योंकि अग्निमाला ने पलट कर दैत्यानिल पर आक्रमण कर दिया।

उफ! अब मैं तुझे हरगिज नहीं छोड़ूंगा।

वह अग्निमाला की तरफ झपटा...

...लेकिन तब तक कीमती लाल वायुयान तोते को आदेश दे चुका था

सर्र-सर्र-सर्र!

उफ!

अरे!

कीमतीलाल का जवाब सुनकर दैत्यानिल क्रोधित हो गुर्रा उठा–
क्या ऽऽऽ? तेरी ये मजाल, अब तू जिन्दा नहीं बचेगा।
तभी–
प्रेतवान...
कीमतीलाल प्रेतवान तोते को आदेश नहीं दे पाया और–
अब बोल, तोतों को आदेश देकर मेरे हवाले करेगा या नहीं।
उफ! अब मैं बेमौत मरूंगा।
गूं गूं गूं
ठीक है। मैं तेरा मुंह खोले देता हूं, लेकिन कोई गड़बड़ मत करना, वरना...
दैत्यानिल ने कीमती लाल के मुंह से हाथ हटाया ही था कि–
प्रेतवान तोते इसे खत्म कर दो।
?!

लेकिन रथ में से कोई भी तोता नहीं निकला।
हा-हा-हा!
क्याऽऽऽ? रथ में तीन ही तोते हैं। एक तोता कहां गया?
आखिर कहां चला गया तीसरा तोता?
अब दैत्यानिल ने कीमतीलाल को फिर दबोच लिया।
हा-हा-हा-! अब कोई चालाकी नहीं चलेगी। ला, मुझे दे यह रथ।
कीमती लाल का दम घुटने लगा।
तीसरा तोता तो आकाश में उड़ रहा था...
ओह!
ठाक
धप्प
आह!
...और पहले ही अपना रूप बदल चुका था।
फिर प्रेतवान तोते ने दैत्यानिल पर पुनः हमला किया और उसका हाथ पकड़कर उसे ऊंचे आकाश की तरफ ले गया।
??
और फिर -
नहीं ऽऽऽ
दैत्यानिल को मौत देकर प्रेतवान तोता भी गायब हो गया।

कीमतीलाल अब सुन्दर नगर के काफी निकट पहुंच चुका था।

शाम हो चुकी थी। तभी –
गिल..गिल
गिल..गिल

आवाज सुनकर कीमतीलाल को रुक जाना पड़ा, लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं पड़ा। वह फिर आगे बढ़ा, लेकिन –
अबे, मेरा गला कौन घोंट रहा है? सामने आओ!

ले, आ गई तेरे सामने। लेकिन इतना याद रख...
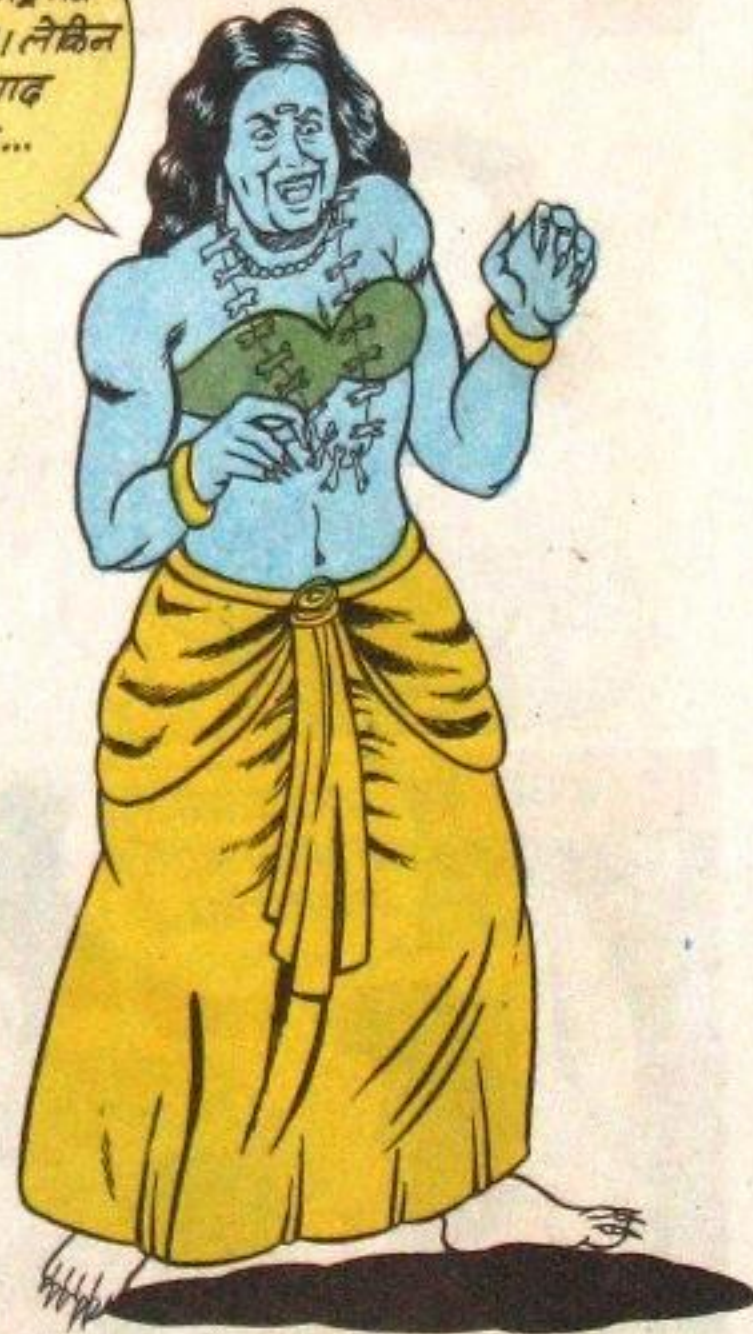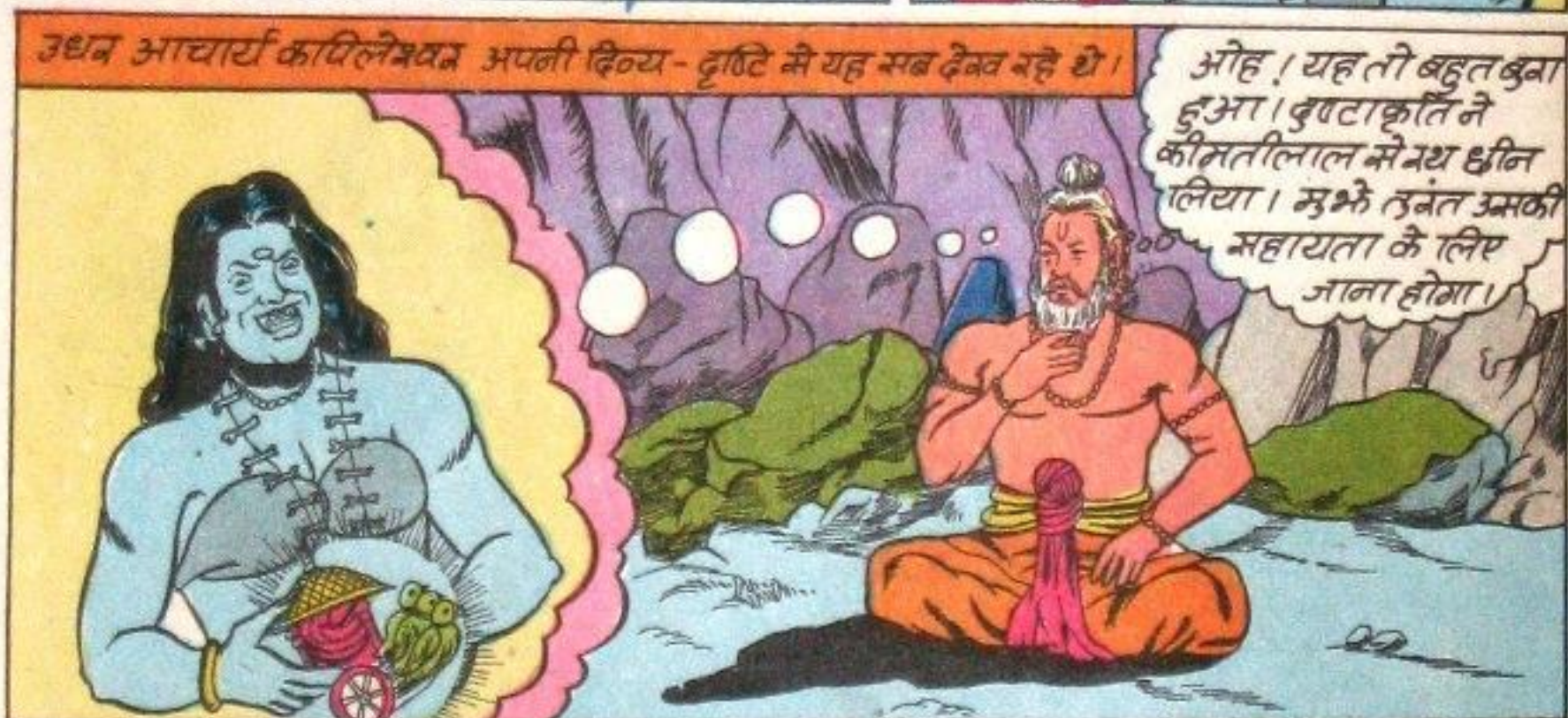
...उन सबसे तो तू बच गया, लेकिन दुष्टाकृति से नहीं बच सकेगा।
ला इन तोतों को मुझे दे दे।
नहीं, यह रथ मैं किसी को नहीं दूंगा।
कीमती लाल इतना ही कह पाया था कि दुष्टाकृति ने रथ छीन लिया।

हा-हा-हा! अब यह रथ मेरा है। मुझे कोई नहीं मार सकता।

उधर आचार्य कपिलेश्वर अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब देख रहे थे।
ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ। दुष्टाकृति ने कीमतीलाल से रथ छीन लिया। मुझे तुरंत उसकी सहायता के लिए जाना होगा।

इधर-
अदृश्यवान तोते! इस दुष्टाकृति को समाप्त कर दो।
अदृश्यवान तोता तेरा नहीं, अब मेरा कहना मानेगा, क्योंकि रथ अब मेरे पास है। अतः मरने के लिए तैयार हो जा।

फिर जैसे ही दुष्टाकृति ने कीमतीलाल को खत्म करने का आदेश देने के लिए मुंह खोला –
यह क्या चक्कर है ? तीन - तीन रथ? दो रथ कहां से आ गए...
...लेकिन इनमें असली रथ कौन - सा है ?

असली रथ छोड़कर उसने नकली रथ को पकड़ना चाहा, मगर –
ऐं! गायब हो गया। इसका मतलब, असली रथ वही था, जो मेरे हाथ में था। कहां गया वह ?

असली रथ मेरे पास है दुष्टाकृति !
अदृश्यवान तोते! अब इसे पाताल लोक पहुंचा दो।

इतना सुनना था कि –
धाड़
आह ऽऽऽ
अपने कर्तव्य से मुक्ति पाकर अदृश्यवान तोता अदृश्य हो गया।

कीमतीलाल जब सुन्दर नगर के कस्बे में पहुंचा तो रात्रि की कालिमा फैलने लगी थी।
दो तोते अभी भी बचे हुए हैं। इनके नाम क्या हैं? ये कैसे खत्म होंगे? मुझे कुछ भी तो नहीं मालूम?

तभी-

यह तुम्हें मैं बताता हूं।

हां वत्स, मैं!

आचार्य जी, आप!

अब तुम अमृतवान तोते को आदेश देकर अमृत प्राप्त करो।

हे अमृतवान तोते! हमें अमृत दो।
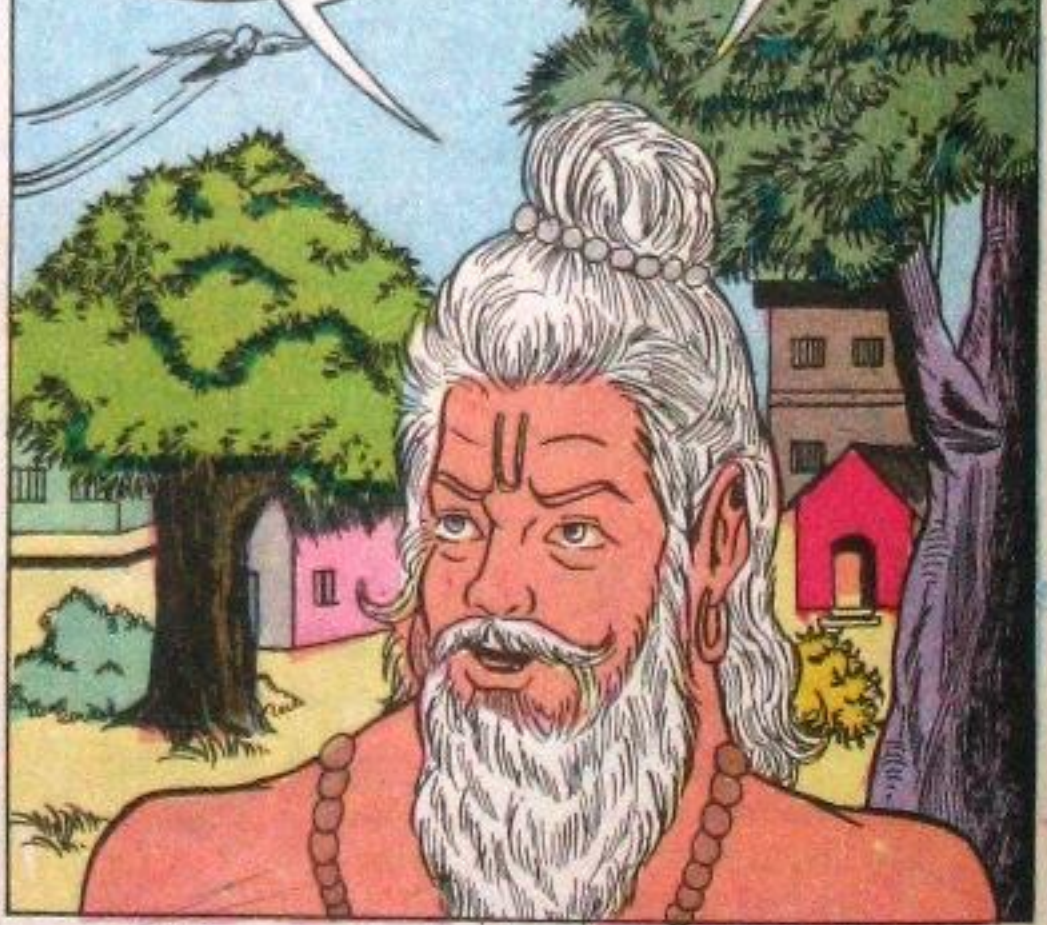
लेकिन आचार्य जी मैं कुछ पूछना चाहता हूं।
हां-हां, पूछो।
आचार्य जी! सोमान ने नील घाटी पर कठोर तपस्या करके शंकर भगवान से जब सात तोतों का रथ प्राप्त कर लिया तो इसकी खबर अन्य लोगों को कैसे हो गई?
आचार्य कपिलेश्वर बताने लगे।
सोमान ने जब उन तोतों का दुरुपयोग करने का फैसला किया तो इन्द्रदेव ब्रह्माजी के पास गए और उन्हें सारी बात बताई...
यदि सोमान को रोका नहीं गया तो पूरा ब्रह्मांड तबाह हो सकता है भगवन्, वह तोतों को आदेश देकर जो चाहे करा सकता है...
...अब आप ही कोई उपाय कीजिए।
वो तो करना ही पड़ेगा इन्द्र, क्योंकि शंकर जी का दिया वरदान वापस भी तो नहीं लिया जा सकता। अब इस सृष्टि को बचाने का सिर्फ एक ही उपाय है। उन तोतों को ही समाप्त करा दिया जाए।
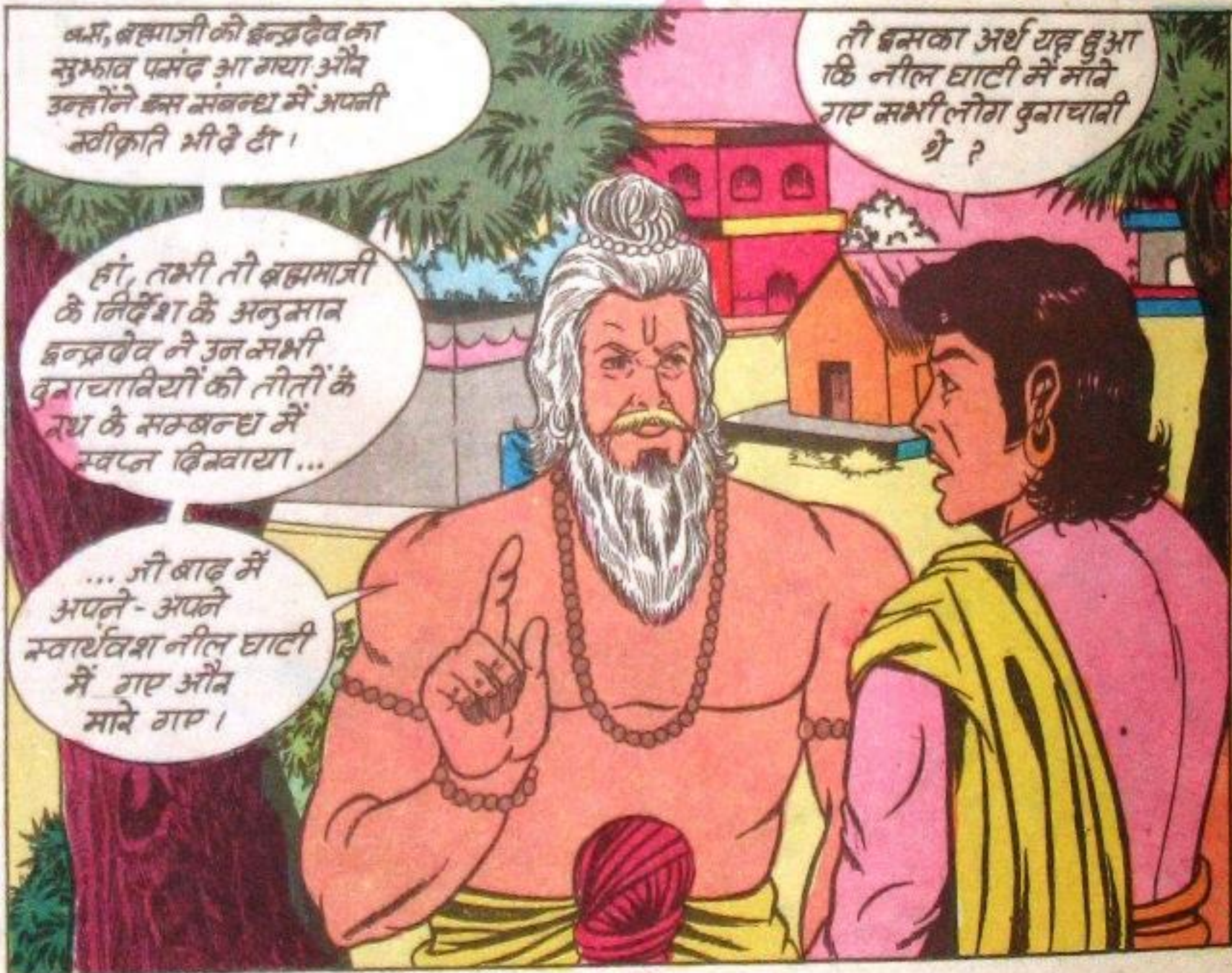
बस, ब्रह्माजी को इन्द्रदेव का सुझाव पसंद आ गया और उन्होंने इस संबन्ध में अपनी स्वीकृति भी दे दी।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि नील घाटी में मारे गए सभी लोग दुराचारी थे?

हां, तभी तो ब्रह्माजी के निर्देश के अनुसार इन्द्रदेव ने उन सभी दुराचारियों को तोतों के वध के सम्बन्ध में स्वप्न दिखवाया...

...जो बाद में अपने-अपने स्वार्थवश नील घाटी में गए और मारे गए।

आचार्य जी एक प्रश्न और ? शंकर भगवान ने सोमान को ऐसा वर दिया ही क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें आचार्य नहीं मैं भलीभांति दे सकता हूं।
कौन ?

मैं हूं सोमान।
सोमान ?
हां मैं। मैं तुम्हें बताता हूं कि शंकर भगवान को यह रथ मुझे सौंपने के लिए क्यों बाध्य होना पड़ा।
यह कहकर सोमान अपने अतीत में खोता चला गया।

आज से तीस वर्ष पूर्व की बात है मैं नील घाटी में मां काली के दर्शन करने गया था। पूजा करके मैं लौट ही रहा था कि एक गुफा को देखकर चौंक पड़ा। उत्सुकतावश मैं उसके अंदर घुस गया...
यहां तो कोई भी नहीं है, लेकिन यह सामान किसका है ?

... उन सामानों में मुझे एक अति प्राचीन पुस्तक मिली और मैं वहीं बैठकर उसका अध्ययन करने लगा...

...पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद मेरा चेहरा खिल उठा...
मैं करूंगा शंकर भगवान् की आराधना। इस पुस्तक के अनुसार अभी तक ऐसी तपस्या करने का साहस किसीने भी नहीं किया है।

... फिर अगली सुबह से ही मैंने उसी गुफा में वह आराधना शुरू कर दी। इस प्रकार तपस्या करतेकरते बारह वर्ष बीत गए। एक दिन शंकर भगवान् ने दर्शन दिए ...
बोल वत्स! क्या वर मांगता है?
प्रभु! आप मुझे अपना सात तोतों का रथ प्रदान कर दीजिए।

... मेरे वर के बारे में जानकर शंकर भगवान् चौंक पड़े ...
सात तोतों का रथ? वह रथ किसी को नहीं मिल सकता, क्योंकि उसमें मेरी सात शक्तियां हैं। उनके बल पर कोई भी इस दुनिया में तबाही मचा सकता है। तुम कोई और वर मांग लो।

नहीं भगवन्! मुझे वर में वही रथ चाहिए।
फिर तो मजबूरी है।
... इतना कहकर शंकर भगवान् अंतर्धान हो गए...

... उस दिन के बाद से मैंने अपनी तपस्या को एक नया मोड़ दे दिया। अपने शरीर के विभिन्न अंगों को चीरा लगाकर खून निकालता और उसे एक कटोरे में भरकर हवन-कुंड में उड़ेल देता।

ओउम् नमः शिवाय

...फिर मैंने अपनी आराधना को भयानक रूप दिया और पांच वर्ष तक अपने शरीर का मांस काट-काट कर तपस्या करता रहा...
ओइम नमः शिवाय

एक दिन शंकर भगवान् फिर अवतरित हुए और...
ओइम नमः शिवाय
अगर तू अपनी जिद नहीं छोड़ेगा तो मैं तुझे भस्म कर दूंगा।

प्रभु! आप भले ही मुझे भस्म कर दें, लेकिन मैं लूंगा वही रथ।
ओह!
बड़ा जिद्दी है। मैं इसे भस्म भी तो नहीं कर सकता।
...शंकर भगवान् फिर अंतर्धान हो गए...

...इस तरह दो वर्ष और बीत गए...
ओइम नमः शिवाय
इस दौरान मैं अपने दोनों हाथों और दोनों पैरों की भी स्वाह कर चुका था...

...अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अब मैं इस आराधना का उपसंहार करने ही वाला था कि...
रुक जा भक्त, रुक जा! तू जीता, मैं हारा...
ओइम नमः शिवाय
...मैं तुझे सात तोतों का रथ प्रदान करता हूं। लेकिन इसका दुरुपयोग मत करना, वरना बेमौत मारा जाएगा।

...फिर पलक झपकते ही मैं सात तोतों का स्वामी बनकर पूर्णत: स्वस्थ हो गया...

धन्यवाद प्रभु ! लेकिन आपको एक वर और देना होगा। अगर कोई व्यक्ति मुझसे जबरदस्ती यह रथ छीनने की कोशिश करे तो उसकी तत्काल मौत हो जाए।

तथास्तु ! लेकिन अगर तूने स्वेच्छा से किसी को यह रथ दे दिया तो उसकी मौत नहीं होगी। फिर ये तोते और रथ उसीका आदेश मानेंगे।

दूसरे दिन रुद्रपुर में -

बस महारानी जी! यही थी सात तोतों के वध की कहानी।

आखरी तोते का उपयोग मैं अब करूंगा, लेकिन इससे प्राप्त धन आपको अच्छे कार्यों में लगाना होगा।

लेकिन तुमने आखरी तोते का उपयोग क्यों नहीं किया?

ऐसा ही होगा।
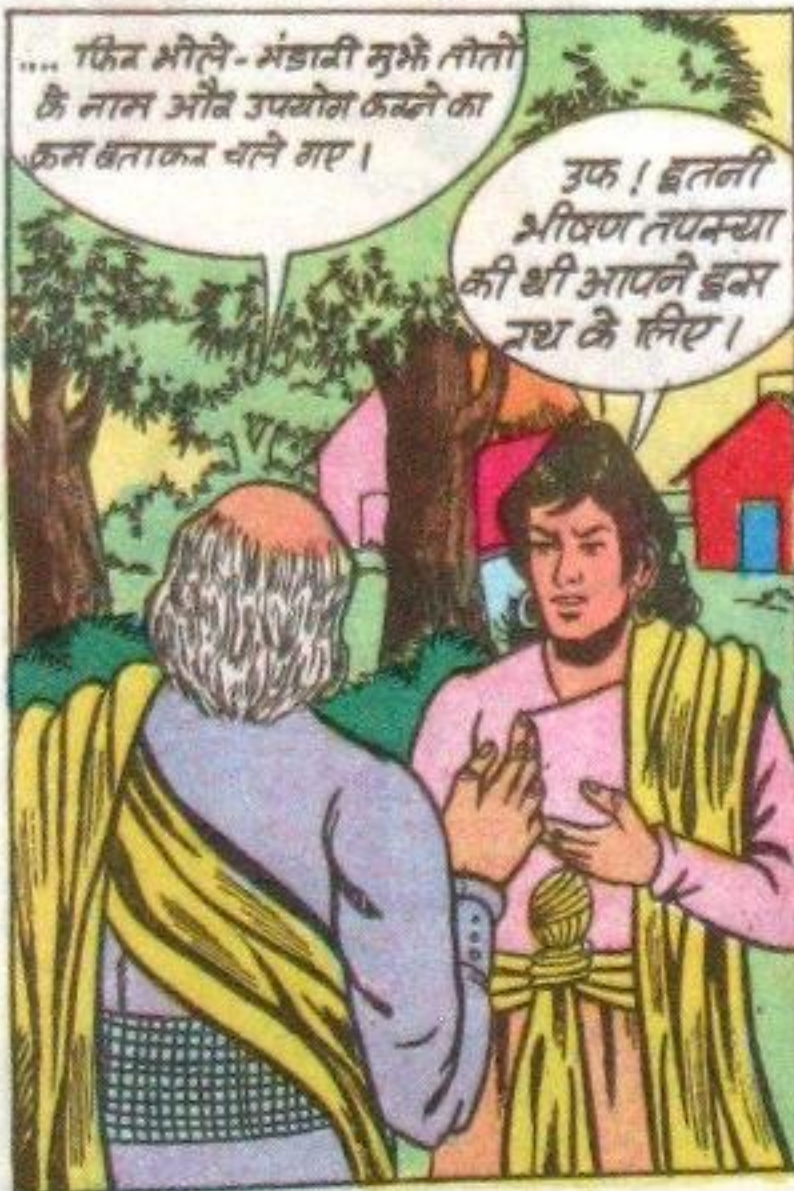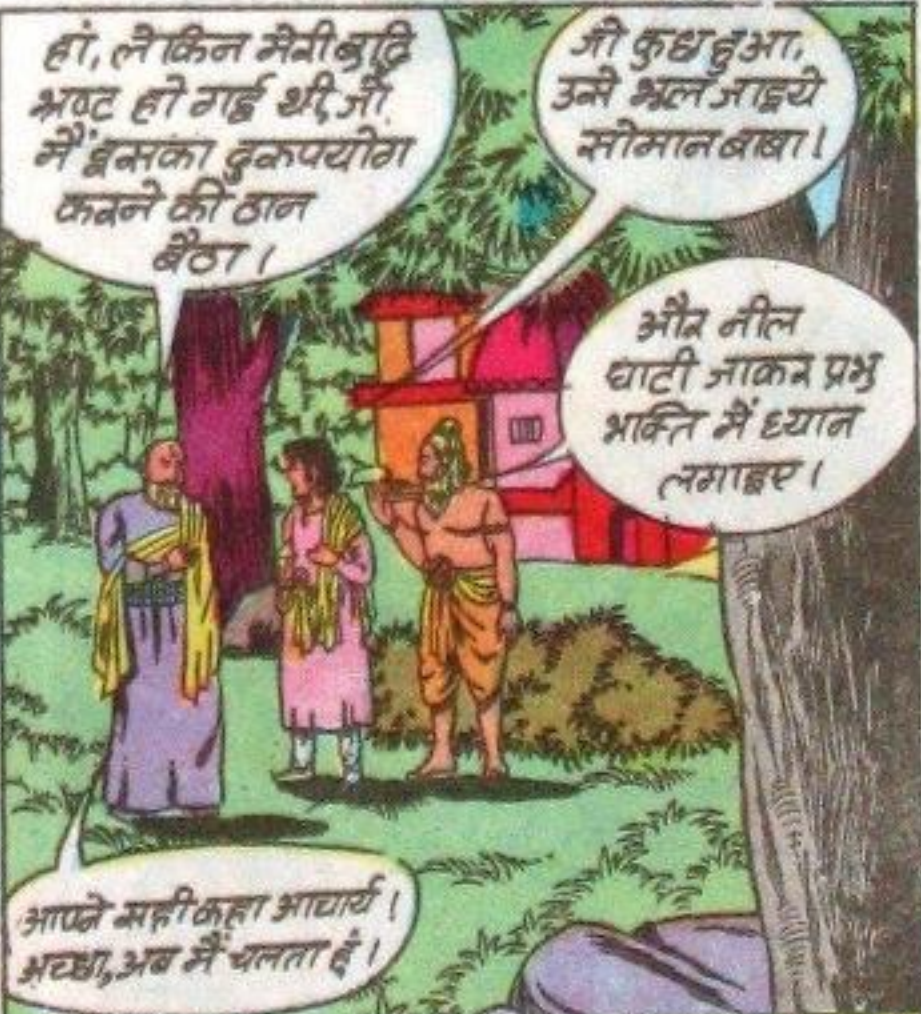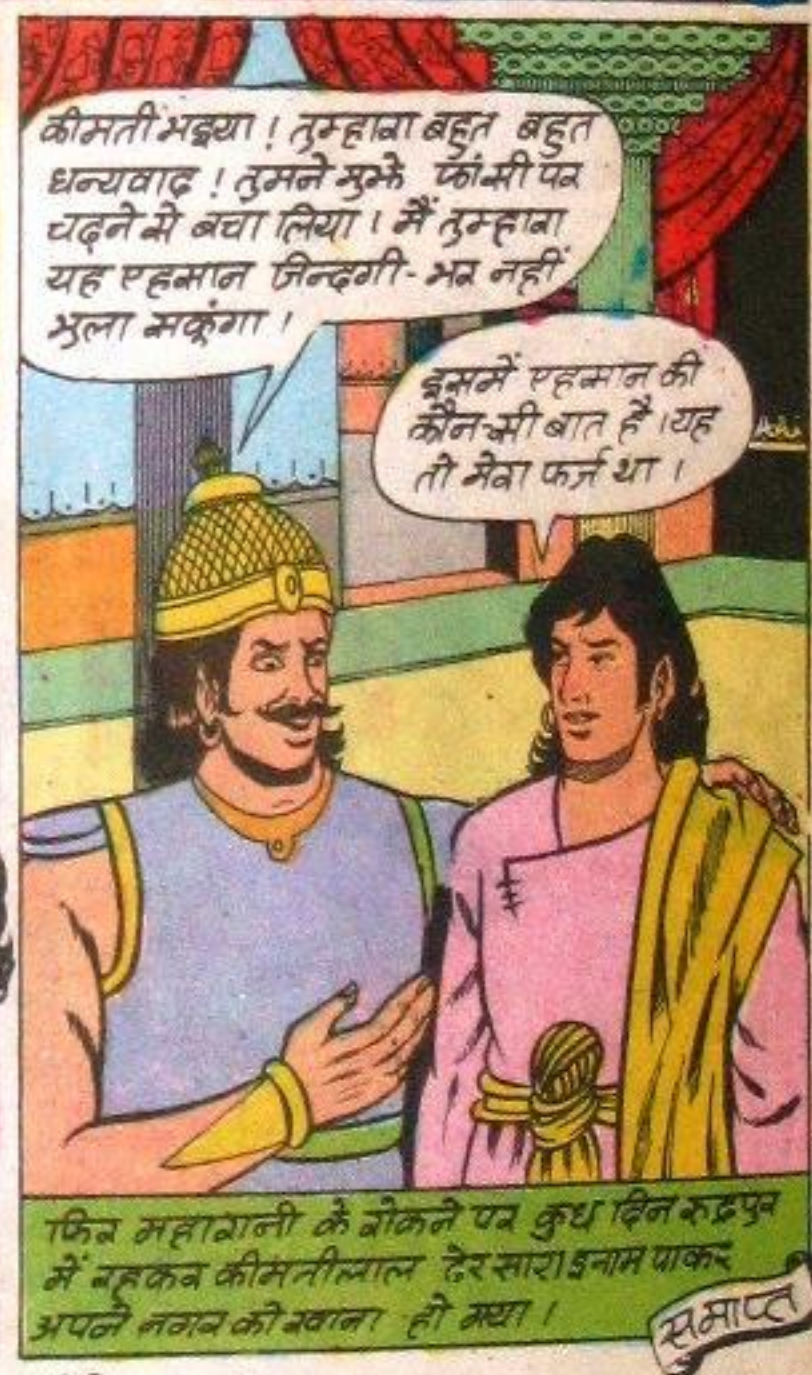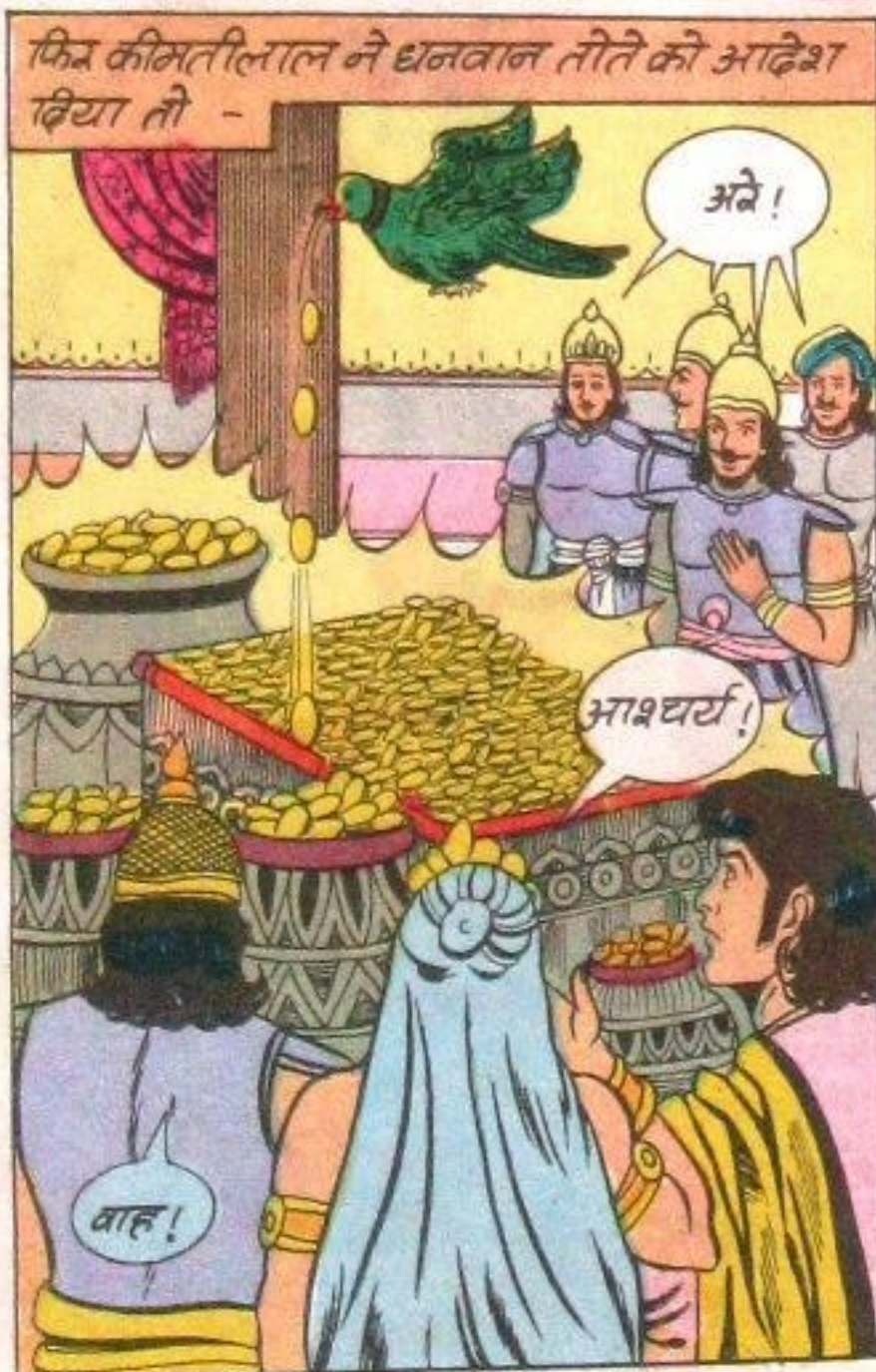
जब आदमखोर कबीले ने आदिवासियों को खाने का घिनौना खेल शुरू किया, तब एक मजबूत चट्टान की तरह उनके सामने आ खड़ा हुआ शक्तिमान!
शक्तिमान
और
आदमखोर कबीला
कथानक - हनीफ अजहर
चित्रांकन - आकृति फीचर्स

एक ऐसी कालमुद्रा, जिसके कारण कीमती लाल एक ऐसे काल में पहुंच गया, जहां उसका सामना हुआ एक और कीमती लाल से...
दो सैट के साथ नये साल की डायरी मुफ्त
एक हैरतअंगेज महाकॉमिक्स
कीमती लाल और कालमुद्रा
पृष्ठ 48 मूल्य 12-00